वंदे मातरम्

(बाल नाटक)

वंदे मातरम्

(बाल नाटक)

डॉ. आभा पूर्वे

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

ISBN : ९७८.८१.९६७८४२.९.१

प्रथम संस्करण
२०२६

सर्वाधिकार ©
लेखिकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

चित्र : सोशल मीडिया से साभार

मूल्य
एक सौ पचीस रूपये मात्र

अंगिका विकास लेली
तन-मन सें समर्पित
कश्मीरा सिंह
रोमा झा
डॉ. शोभा कुमारी
लें ई संग्रह!

—आभा

ई संग्रह लें दू शब्द

जबें अंगिकाहे में लिखलों बाल नाटक के संग्रह 'लाल, बाल, पाल' पढ़लियै, तें हमरों मनों में ऐलों कि कैन्हें नी बच्चा सिनी वास्तें महिला वीरांगना पर बाल-नाटक लिखौं, जेकरों अंगिका में एक्दम्मे अभाव छै आरो हमरों वास्तें ई बड्डी कठिन काम छेवो नै करलै। रेडियो लें नाटक लिखै के अनुभव तें हमरा छेवे करै। सोचलें यहू छेलियै कि नाटक नै बनें पारतै तें ऐतिहासिक कहानी बनाय देवै, मतर ई एकांकी पढ़ी जबें डॉ. शोभा कुमारी (व्याख्याता : विश्वविद्यालय अंगिका विभाग) नें ठीक कही देलकै, तें निश्चय करलियै, एकरा छपैयो देलों जाय। ई बाल-नाटक संग्रह के यहा कथा छेकै। बस!

—आभा

१५ अगस्त २०२६

सम्पर्क : संपादक, नया हस्तक्षेप
शरद चंद पथ, मशाकचक,
भागलपुर, बिहार, पिन-८१२००२

नाटक आरो पृष्ठ :-

- वंदे मातरम् ९
- रानी गाइदिन्ल्यू १५
- नीरा आर्या २०
- क्रांतिकारी भीकाजी रुस्तम कामा २६
- मातंगिनी हाजरा ३२

वंदे मातरम्

(शांति, क्रांति दौड़लों-दौड़लों आवै छै आरो चटाय पर बैठली नानी के आगू बैठी जाय छै। नानी कुछ पूछै लें चाहै छै कि शांतिहैं पहलें बोलना शुरू करै छै)

शांति : नानी! नानी! ई चटगाँव कैठां छै? इस्कूली के मैम नें कहलें छै, हमरा सिनी चटगाँव के बारे में जानी कें आवौं, कैन्हें कि कुमारी प्रीतिलता वहाँकरे रहैवाली छेली।

क्रांति : हों नानी, मेम यहू कहलें छै कि जे बच्चा प्रीतिलता के बारे में कुच्छू बतैतै, ओकरा क्लास के मुनीटर बनैलों जैतै। नानी, की तोहें कुमारी प्रीतिलता के बारे में जानै छों?

नानी : हों, तोरों नानाहै सें ऊ कुमारी के बारे में हम्मू सुनलें छियै। चटगाँव के ही रहैवाली छेलै!

शांति : ई चटगाँव कहाँ छै नानी?

नानी : पहले तें ई बंगाले में छेलै, मतर जबें बंगाल टुटलै तें ई चटगाँव आबें बंगलादेश में चल्लों गेलै। भले ई जग्घों चटगाँव कहैतें रहें मतर ई बंगाल के नामी शहर

छेकै आरो ई नामी बन्दरगाह में एक। कल तोरासिनी कें बन्दरगाह के बारे में बतैलें छेलियौं, तें यहू जानी लें कि चटगाँव कर्णफूली नद्दी के कातों पर बसलों छै।

क्रांति : ठीक छै, ठीक छै, चटगाँव के बारे में जानी लेलियै, आबें कुमारी प्रीतिलता के बारे में बोलों।

नानी : ओकरे बारे में बतैभौं। तें जलालाबाद में अंग्रेज सैनिक आरो क्रांतिकारी के बीच जबें लड़ाय होलै, तें क्रांतिकारी सिनी अपनों युद्ध जारी रखै वास्तें जलालाबाद पहाड़ी चुनलकै।

शांति : नानी, ई जलालाबाद पहाड़ी कहाँ छै?

नानी : यहू आयकों बंगलादेशे में छै। तें बोली रहलों छेलियौं कि अंग्रेज सैनिक सें लड़ाय के बाद क्रांतिकारी सिनी जलालाबाद पहाड़ी में छुपी कें रहें लगलों छेलै, जे क्रांतिकारी के मुखिया छेलै—मास्टर दा सूर्यसेन!

क्रांति : की मुखिया मास्टर छेलै ?

नानी : एकदम। बच्चा कें देशभक्ति के पाठ पढ़ाय छेलै, परीक्षा में चोरी करै के तरीका नै बतावै छेलै।

क्रांति : तें मास्टर दा भी चटगाँवे के छेलै ?

नानी : नै, सूर्यसेन मास्टर दा के जन्म बंगलादेश के नोआपारा गाँव में होलों छेलै आरो हुनी नेशनल हाई इस्कूल में पढ़ाय छेला। हिनिये इन्डियन रिपब्लिक आर्मी यानी भारतीय प्रजातांत्रिक सेना के गठन करलें छेलै, जिनका अंग्रेज नें बाद में फाँसी दै देलें छेलै ।

(बोली कें एक क्षण मौन होयकें फेनू कहना शुरू करै छै।)

तें सुनों, कुमारी प्रीतिलता बाद में वही सेना कें नेतृत्व

करलकै। प्रीतिलताहो मास्टर दा नाँखी मास्टरनी छेलै, चटगाँव के बालिका विद्यालय के हेड मेम छेलै।

शांति : नानी, नानी! ऊ गाँव के नाम चटगाँव कैन्हें छेलै। सब हमरे सिनी नाँखी चट्टी पर बैठे-सुतै छेलै ?

नानी : नै नै। चटगाँव के असली नाम तें चट्टों ग्राम छेलै। प्रीतिलता वहा गाँव के ग्रामीण। तें हम्में की बोली रहलों छेलियों?

क्रांति : प्रीतिलता वहाँ इंडियन रिपब्लिक आर्मी में भर्ती होय गेलै।

नानी : मतर है सब तें बहुत बाद के बात छेकै। बच्चे सें ई बहुत क्रांतिकारी सोभाव के छेलै। यही सोभावों के कारण ऊ बालचर संस्था में आरो बच्चा सिनी कें साथ टिकें नै पारलै, कैन्हे कि प्रीतिलता कें ई कहूँ सें अच्छा नै लागै कि बच्चा सिनी कें अंग्रेज सिनी के प्रति भक्ति भाव सिखैलों जाय, से ऊ संस्थाहे छोड़ी कें निकली गेलै।

चूँकि ई दिन-रात देशे लें सोचतें रहै, तें पढ़ै-लिखै में मोंन की लगतियों। मैट्रिक के परीक्षा फल अच्छा नै रहलै, तें तखनी कलकत्ता के कलकत्ता विद्यापीठ में नामो नै लिखावें पारलै।

शांति : *(हाथ चमकैतें)* तबें तें आगू के पढ़ाय बंद?

नानी : नै नै, वहाँ दाखिला नै मिललै तें की, ढाका विद्यापीठ सें बी.ए. करलकै आरो परिवार के मदद लेली मास्टरी करें लगलै। मास्टरी के नौकरी करतें ही सूर्यसेन मास्टर दा सें प्रीतिलता के मुलाकात होलों छेलै। आरो ओकरों बाद तें जे होना छेलै, ऊ सब होलों। देश भक्ति के रस्ता एकदम खुली गेलों छेलै। सोचें पारै छौ तोरा सिनी कि सूर्यसेन अंग्रेज सरकार द्वारा पकड़ैला

पर जबें जेल में छेलै तें प्रीतिलता चालीसो दाफी हुनका सें मिललों होतै आरो अंग्रेज सेना कें पतो नै चललै। हेनों छेलै ई बहादुर लड़की!

शांति : नानी, इस्कूल में एक सखी बोली रहलों छेलै कि प्रीतिलता जीवन भर कुमारीये रहलै!

नानी : ठिक्के बोली रहलों छेलौं। प्रीतिलतां कसम खेलें छेलै कि जब ताँय देश आजाद नै होय छै, वैं बीहा नै करतै। ओकरों बहादुरी जेल में रामकृष्ण विश्वास सें चालीस दाफी मिलै में ही नै छेलै, कै दाफी सीधे लड़ाय अंग्रेजों सें करलें छेलै। एक लड़ाय में तें अपूर्व सेन आरो निर्मल—दोनो क्रांतिकारी शहीद होय गेलों छेलै, वैमें कुमारी प्रीतिलता वादेदार भी शामिल छेलै, मतर मास्टर दा आरो प्रीतिलता बची कें निकली गेलै।

क्रांति : तबें फेनु ?

नानी : तबें! तबें तें जे होलै, ओकरा पर तोरा दोनो कें विश्वासे नै होतौं। चूँकि अपूर्व सेन साथें निर्मल सेन अंग्रेजी सेना सें मुठभेड़ में शहीद भै गेलों छेलै, तें मास्टर दा आरो प्रीतिलता चुप केना बैठतियै।

शांति : जरूरे अंग्रेजी सेना सें फेनू लड़ी गेलों होतै!

नानी : नै अबकी हेनों नै होलै। एक अलग योजना बनैलों गेलै। ऊ योजना ई बनैलों गेलै कि पहाड़ी के नीचें जे अंग्रेज अफसर सिनी वास्तें क्लब छै, ओकरा पर धावा करलों जैतै। सब बदला चुकाय लेलों जैतै।

क्रांति : *(उत्सुकता सें)* नानी! नानी! की ई ऊ क्लब छेलै जेकरों साइनबोर्ड पर ई लिखलों छेलै कि कुत्ता आरो भारतीय रों प्रवेश मना छै।

नानी : तोरा है के बतैलकौं?

क्रांति : मैमे कही रहलों छेलै कि है वाक्य कहाँ लिखलों छेलै?

ई बतैला पर परीक्षा के पाँच नंबर बेसी मिलतै।

नानी : तें, ऊ क्लब वहा छेलै आरो वही क्लब में जुटैवाला अंग्रेज अफसर के खातमा वास्तें ऊ योजना बनैलों गेलों छेलै। योजना छेलै कि जखनी अंग्रेज अधिकारी सिनी वहाँ रास-रंग में मस्त रहतै, तखनिये प्रीतिलता क्लब के खिड़की सें बम-बारूद बाँधी कें विस्फोट करी देतै।

क्रांति : *(आश्चर्यों सें)* तें की प्रीतिलता हेनों करें पारलकै।

नानी : एकदम करी देलकै। बम-बारूद सें घायल लोगों के चीख-पुकार क्लब में मची उठलै, तें हुन्नो सें गोली चलें लागलै। दुर्भाग्य ई होलै कि एक गोली प्रीतिलता के गोड़ों में लगी गेलै।

(ई सुनी के शांति आरो क्रांति के मुँहों सें 'जा' शब्द निकली जाय छै)

नानी : हों, हेने होलों छेलै। शायत एकरों भनक प्रीतिलताहो कें होय गेलों छेलै, यहीं सें तें वैं कल्पना दत्त सें आत्मरक्षा लेली पोटाशियम साइनाइड लै लेलें छेलै।

शांति-क्रांति : ई की होय छै, नानी?

नानी : जहर। नाग साँप के जहरों सें बेसी खतरनाक!

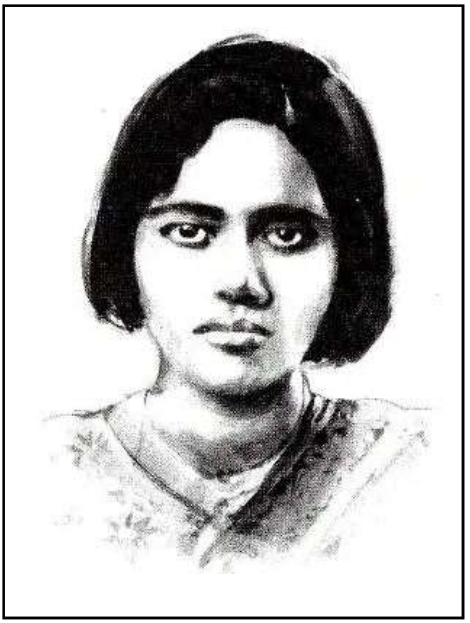
शांति : तबें की होलै ?

क्रांति : अंग्रेजों सें पकड़ाय के डरों सें कहीं ऊ जहर खाय तें नै लेलकै।

नानी : हों, तोहें ठीक अनुमान लगैला। गोली तें गोड़ों में लगिये गेलों छेलै। लंगड़ाय कें कत्तें दूर भागतियै। से कुमारी प्रीतिलता नें वहाँ पोटाशियम साइनाइट मुँहो में रखी लेलकै आरो आँखी में आजाद भारत के सपना लेलें वहीं पर गिरी पड़लै। मतर गिरलै कहाँ, आजाद

भारत के सपना आरो ऊँच्चों होय गेलों छेलै।

(ई कही कें नानी शांति आरो क्रांति कें दोनो कंधा सें लगाय लै छै)



कुमारी प्रीतिलता वादेदार

रानी गाइदिन्ल्यू

(अस्सी साल रों एक बूढ़ी रही-रही कें नाकी पर चश्मा ठीक करतें स्वेटर बुनी रहली छै कि तखनिये एकजोड़िया शांति आरो क्रांति बूढ़ी के नगीच आवी चटाय पर बैठी जाय छै)

दोनों : नानी! नानी! एक बात पूछियौं?

नानी : हों पूछों। की जानै लें चाहै छों?

(स्टेटर बुनना छोड़ी कें क्रूस-ऊन एक दिस रखी दै छै)

दोनों : नानी, तोरा नाना जी घुरी-घुरी रानी गाइदिन्ल्यू कैन्हें कहैं छौं? की तोरों बचपना रों यही नाम छेकौं ?

(नतनी के बात सुनी कें नानी हँसें लागै छै, फेनु हँसी रोकी कें कहै छै)

नानी : नै री नतनी। बचपन रों हमरों नाम वागेश्वरी छेकै। रानी गाइदिन्ल्यू तोरों नाना के देलों नाम छेकै!

शांति : रानी गाइदिन्ल्यू के छेलै आरो नाना तोरा ई नाम कैन्हें देलें छौं?

नानी : तोरों नाना हमरा ई नाम कैन्हें देलें छै, से तें नै बतावें पारौं, मतर रानी गाइदिन्ल्यू के छेली, ओकरों बारे में कुछ जरूरे कहें पारौं, जे हम्में आपनों बाबू सें सुनलें छेलियै।

दोनों : *(उत्सुकता सें)* के छेलै नानी?

नानी : नागालैंड के बारे में सुनैलें छियौं। गाइदिन्ल्यू वहाँकरे एक कबीला केरों पुरोहित के बेटी छेली। मिशनरी इस्कूल में पढ़ली-लिखली छेली, तें कबीला सें कुछ अलग मिजाजो राखै छेली। एकरे एक चचेरों भाय छेलै, नाम छेलै—जादोनांग। ई जादोनांग नें हजारो नागा लोगों के मिलाय-जुलाय कें वहाँकरों अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध बिगुल फूँकी देलकै आरो अपना कें स्वतंत्र बतैतें हुएँ नागा सिनी के नेता बनी बैठलै।

क्रांति : तबें?

नानी : तबें? तबें तें अंग्रेज सरकार के तरबा रों लहर, गोस्सा मगजे पर चढ़ी गेलै। जादोनांग कें पकड़वे नै करलकै, ओकरा पर अंग्रेज सिपाही कें मारै के आरोप लगाय कें फाँसी पर चढ़ाय देलकै।

शांति : ई फाँसी की होय छै?

नानी : ठोठो चाँपवों बुझै छै नी, जे तोरों नाना गोस्सा में बोलतें रहै छौं, एक किसिम सें फाँसी होने होय छै।

क्रांति : ओ! तबें की होलै ?

नानी : तबें? अंग्रेजें तें यहा सोचलें छेलै कि जादोनांग के बाद खेले खतम होय जैतै, मतर हेनों नै होलों छेलै। आबें गाइदिन्ल्यू ऊ विद्रोही नागासिनी के सरदारनी बनी गेलों छेलै आरो अंग्रेज के खिलाफ लड़ें लागलै।

क्रांति : नानी, मतर तोहे तें बतैलें छेलौ कि अंग्रेज के पास बहुत बड़ों फौज छेलै, ओकरों बराबरी तबें गाइदिन्ल्यू

केना करतें होतै?

नानी : तोरों शंका सहिये छौं। सरदारिन छापामार युद्ध करै छेलै, नुकी-छिपी कें, जेकरा गुरिल्ला युद्धो कहै छै, तें गाइदिन्ल्यू कें पकड़नौ मुश्किल छेलै।

शांति : तबें फेनू?

नानी : तबें की! पढ़ली-लिखली तें छेवे करली। ऊ अपनों इलाका सें हटी कें दूसरों इलाका के कबीला सिनी कें अपनों विद्रोही सेना में मिलाना शुरू करी देलकै।

दोनों : तें ऊ सिनी मिलियो गेलै, अंग्रेज सेना के डोंर नै लगैलै ?

नानी : डरतें तें होवे करतै, तहीं सें ऊ सब चुप छेलै। मतर जबें रानी गाइदिन्ल्यू नें ऊ कबीला सिनी कें समझैलकै कि केना अंग्रेज सिनी तोरों जोंर-जमीन, गाछ-बिरीछ सें धोंन कमाय कें तोरा गरीब सें गरीब बनैलें जाय रहलों छै, तें ऊ कबीला सिनी कें बात बुझै में ऐलै, आरो वहू सब अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध हुएँ लागलै। बात यहाँ तक आवी गेलै कि रानी गाइदिन्ल्यू नें अंग्रेजी सरकार कें कर दै सें ऊ विद्रोही सिनी कें मना करी देलकै। कर माने बुझवे करै छैं, टैक्स।

क्रांति : तबें तें अंग्रेज सरकार के गोस्सा आरो बढ़ी गेलों होतै?

नानी : एकरा की बताय के बात छेकै? रानी पकड़ाय गेलै। पकड़ैलै तबें जबें ऊ छिपै वास्तें मणिपुर के पुलोमी गाँव के जंगल में सेना के छिपै वास्तें काठ के किला बनवाय रहलों छेलै, तभिये असम राइफल्स के एक टुकड़ी नें रानी कें गिरफ्तार करी लेलकै।

शांति : तबें छुटलै की नै?

नानी : छुटलै, मतर आजादी मिल्ला के बाद यानी उन्नीस सौ

सैंतालीस के बाद। एकरों पहलें एकाध नेता रानी कें जेल सें आजाद करै लें अंग्रेजी सरकार कें चिट्ठियो लिखलकै, मतर सब बेरथ। खैर, जबें भारत आजाद भेलै आरो रानी जेल सें बाहर भेलै, तें फेनू सें नागा संस्कृति के रक्षा लेली भारत के अधीन एक स्वतंत्र राज्य के माँग वास्तें अड़ी गेलै ताकि नागा संस्कृति साथें नागा जाति के आर्थिक अवस्था पर ठीक सें ध्यान देलों जावें सकें। यहाँ तक ठिक्के छेलै, मतर...

शांति : की फेनु कुछ होय गेलै रानी कें?

नानी : होलै तें कुछ नै। मतर रानी बस यहा चाहै छेलै कि नागा सिनी के आर्थिक-सांस्कृतिक सुरक्षा लेली भारत के अधीन एक अलग राज्य बनें, मतर नागा विद्रोही में एक हेनों गुट छेलै, जे चाहै छेलै कि नागासिनी के अलग राज्य नै, अलग देश बनें। भारत सें अलग, एकदम स्वतंत्र राष्ट्र।

दोनों : तबें?

नानी : तबें की। रानी आरो नया गुट—जेकरा लोगें नागा मुक्ति दलों के नाम सें जानै छै—के बीच बाद-विवाद शुरू होय गेलै, आरो ई विवाद- संघर्ष एत्तें बढ़लै कि रानी कें फेनु सें छुपै लें पड़लै। ई बात भारत के आजादी मिलला के बाद के बात छेकै!

क्रांति : तबें फेनु की होलै?

नानी : होतियै की। आखिर में रानी के बात रहलै आरो सन १९६३ में नागालैंड एक अलग राज्य भारत देश के अधीन बनलै!

दोनों : तबें तें रानी ओकरों मुखमंत्री बनलों होतै ?

नानी : ऊ मुख्यमंत्री बनै वास्तें थोड़े जनमली छेलै, ऊ तें नागा संस्कृति के रक्षा लेली धरती पर ऐली छेलै। तहीं

सें ओकरा नै खाली पद्मभूषण सें सम्मानित करलों गेलों छेलै, विवेकानंद सम्मान सें भी सम्मानित होलै। नै खाली स्त्री शक्ति पुरस्कार सें ही पुरस्कृत होलै बलुक मरला के बादो उन्नीस सौ छियानवे में बिरसा मुंडा सम्मान सें सम्मानित होलै। सोचें पारै छों, ऊ केन्हों रानी होतै। लोगें ओकरा दोसरों रानी लक्ष्मी बाई के नामों सें जानै छै, जेकरों स्मृति में सन् उन्नीस सौ छियानवे में ही भारत सरकार नें डाक टिकटो जारी करलें छेलै। रानी गाइदिन्ल्यू के मिरतू सत्रह फरवरी उन्नीस सौ तेरानवे कें होलों छेलै।

दोनों : ठिक्के में बड़ी बहादुर रानी छेलै!

नानी : यैमें की शक?

(नानी दोनों नतनी कें गल्ला सें लगाय लै छै)



रानी गाइदिन्ल्यू

नीरा आर्या

(८० साल के एक बूढ़ी औरत साड़ी के एक कोरी सें आँख पोछी-पोछी गीत गावी रहलोंे छै)

केकरा गुमान नै छै, नीरा आर्या पर कहोंे
भारत के हेनोंे बेटी, देवी के समान छै
माँटी केरोंे हेनोंे बेटी कहियो नै मरें पारें
हेनोंे के छै जेकरा कि नीरा पर नै ध्यान छै!

(कि तरखानिये दस-दस साल के दू बच्ची दौड़लोंे-दौड़लोंे ओकरोंे नगीच आवी कें बैठी रहै छै)

दोनों बच्ची : दादी, दादी! ई गीत कोंेन पर्वो के छेकै?

दादी : *(दोनों कें गल्लोंे लगैतें)* अरे पोती सिनी, ई पर्वोंे के गीत नै छेकै, नीरा आर्या पर लिखलोंे गीत छेकै, गीत तें बहुत बड़ोंे छै, बस हमरा कुछु पंक्ति याद छै, ओकरै दोहरैतें रहै छियै।

पोती १: दादी, गीत तें भगवानो लेली होय छै या फेनु महापुरुखोंे लेली।

दादी : से तें ठिक्के, मतर नीरा कोय देवी या महापुरुष सें केन्हौ कें कम नै छेलै।

पोती २: ऊ कना कें, दादी ?

दादी : सुनवैं? तें सुनाय छियौं।

(दोनो पोती पालथी मारी कें बैठी जाय छै)

दादी : तोरा दोनो कें सुभाष चंद्र बोस के कहानी सुनैलें छियौं, जिन्ही आजाद फौज के स्थापना करलें छेलै।

पोती १ : हों दादी!

दादी : तें नीरा आर्या के कहानी वहा फौज सें जुड़लों छै।

पोती २ : फौज में की करै लें गेलों छेलै?

दादी : ई जानै सें पहलें नीरा के छेली, ई जानी ला। ई छज्जूमल के बेटी छेकै आरो छज्जूमल उत्तर प्रदेश के बागपत जिला के हेनों-तेन्हों व्यापारी नै छेलै। मतर केकरों दिन केना गिरतै, के कहें पारें। छज्जूमल के दिन गिरलै तें कलकत्ता के हुनकों एक नामी आर्य समाजी छज्जूराम लांबा नें नीरा आर्ये कें नै, ओकरों भाय वसंत कुमारो कें गोद लै लेलकै। कलकत्ते में दोनो पल्लै-बढ़लै, पढ़वो-लिखवो करलकै। हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला तें जानवे करै छेलै, संस्कृतो होने जानै छेलै। आबें हेनों लड़की कें बोस जी अपनों फौज में केना नै रखतियै। जानै तें छेलै, बहुत पहले सें।

पोती १: से केना ?

दादी : से कना, तें यहू जानी ला। जबें नीरा बहुत छोटी छेली तें समुद्र में नहाय वक्ती डूबें लगली। एक किशोर नें देखलकै तें हेली कें बचाय लेलकै। जानै छौ, ऊ किशोर के छेलै? ऊ लड़का सुभाष चंद्र बोस छेलै।

दोनों : की सच्चे दादी?

दादी : एकदम सच। आरो एक बात जानी ला। दोनो भाय-बहिन नीरा आरो वसंत बचपने सें देशभक्त छेलै, यही वास्तें जबें आजाद हिन्द फौज बनलै तें दोनों भाय-बहिन ऊ फौज में शामिल होय गेलै। गुण तें कूटी-कूटी कें भरले छेलै, तें सुभाष चंद्र बोस नें नीरा कें फौज के कैप्टन बनाय देलकै। आरो है रं नीरा फौज के सिपाही बनी गेलै।

पोती १ : तें नीरा देवी फौज में असकल्ली औरत सिपाही छेलै?

दादी : महिला सिपाही के तें अलगे शाखा छेलै, झाँसी के रानी के नामों पर। नीरा के हिस्सा में जासूसी के काम छेलै। आरो यहा काम नीरा के पति श्रीकांत जयरंजन दास, जे ब्रिटिश सरकार के अधीन सी.आई.डी. इन्सपेक्टर छेलै, वहूँ जासूसिये के काम करै, मतर सुभाष चंद्र बोस के विरुद्ध ही। दोनो के सोभाव दू किसिम के। नीरा एकदम देशभक्त आरो जयरंजन एकदम उल्टा। तोहें पूछलें छेलैं नी कि नीरा कें नीरा नागिन कैन्हें बोलै छै?

पोती २ : हों दादी, पहलें यही बताय दौ।

दादी : तें सुनों, एक दाफी जयरंजन, जे हमेशे सुभाष बोष के खोजे में रहें, कहीं सुभाष चंद्र बोस कें देखी लेलकै आरो हुनका पर गोली चलाय देलकै। गोली बोष कें तें नै लगलै, बोस के ड्रायवर कें लगलै। ई देखथैं नीरा नें आपनों पति जयरंजन पर गोली चलाय देलकै, तबें तें ऊ वहीं पर ढेर होय गेलै। जबें है बात बोस जी कें मालूम होलै तें हँसतें कहलकै, तोहें तें नागिन नीरा निकल्ली। आरो तहिये सें ओकरों यहू नाम फौज में प्रचलित होय गेलै।

(सुनी कें दोनो पोती हँसें लागै छै)

पोती १ : तबें की होलै ?

दादी : तबें? तबें तें अंग्रेजी सेना नीरा के खोज में लगी गेलै। दुर्भाग्य सें ऊ पकड़ैयो में आवी गेलै।

दोनों : जा! तबें तें जेल होय गेलों होतै ?

दादी : ऊ तें होन्है छेलै। दिल्ली के लाल किला में ओकरों फैसला होलै। पहलें तें कलकत्ता जेलों में नीरा कें रखलों गेलै, फेनू काला पानी के सजा होय गेलै।

पोती २ : यानी समुन्दर पार के जेलों में?

दादी : ठीक समझला! वहीं सेलुलर जेल में। की नै कष्ट देलों गेलै बेचारी के, मतर देश के नाम पर सब झेली गेलै। एक दाफ़ी एक अंग्रेज सिपाही पूछलकै कि वैं सच-सच बतावों कि बोस कहाँ छिपलों छै आरो जबें नीरा कहलकै, हमरों मनो में, तें जानै छौ, गाछ के टहनी काटैवाला बड़का कैंची सें ओकरों देह काटें लागलै। हेनों-हेनों कष्ट सही गेलै।

दोनों : तें फेनू नीरा देवी छुटलै की नै?

दादी : हों छुटलै, जबें देश आजाद होय गेलै, उन्नीस सौ सैतालीस में।

पोती २ : फेनू?

दादी : फेनू की! नै सरकार सें कोय मदद लेलकै, नै केकरो सें जीवन खेपै लें सहयोग माँगलकै। भाय वसंत कुमार तें आजादी के साधू बनी गेलों छेलै। हेनों हाल में ऊ हैदराबाद के एक झोपड़ी में रहें लागलै। फूल बेची कें पेट पालै, मतर केकरो मदद नै लेलकै। ओकरों झोपड़ी कोय सरकारी जमीन पर छेलै। झोपड़ियो एक दिन तोड़ी देलों गेलै। आबें तें आरो दुख बढ़ी गेलों छेलै।

देह तें टुटिये रहलों छेलै, आखिर बीमार पड़ी गेलै। लोगें हैदराबाद के उस्मानिया अस्पताल में ओकरा भर्ती कराय देलकै, मतर नीरा आर्या बचें नै पारलै।

पोती १ : की तभियो ऊ देवी कें देखै लें कोय नै ऐलै।

दादी : पोती, तोहें नीरा आर्या कें देवी बोललैं नी, ऊ तें पूरे दक्षिणवासी पेदम्मा ही कहै छेलै, तेलगू भाषा में एकरों माने भी तें देवी ही होय छै।

पोती २ : तें पेदम्मा कें आखरियो वक्ती देखैवाला कोय नै छेलै?

दादी : *(आँचल सें आँख पोछतें)* के देखतियै? जखनी नीरा छोटिये छेलै, माय-बाबू संसार छोड़ी देलकै, घोंर पर कोय साहूकार कब्जा करी लेलें छेलै। हौ तें छज्जूमल लांबा छेलै जे बहिन आरो भाय, नीरा आरो वसंत कें गोद लै लेलकै। नीरा के मिरतु १९९८ ई. में होलै।

पोती १ : दादी, तोहें पेदम्मा के बारे में एत्तें-एत्तें केना जानै छों?

दादी : अरे हुनकों ऊपर महाकाव्य लिखलों गेलों छै, उपन्यास छै तें छै, नीरा आर्या पर फिल्मो बनलों छै। तोरा मालूम छौं, तोरों काकाहौं ई वीरांगना पर एक कविता लिखलें छौं, जेकरों ओरी के पंक्ति छेकै,

नीरा गंगा केरों नीर
मन के हरै छै सब टा पीर
देशों के दुश्मन के खातिर
पिस्टल रों गोली, जंजीर।

ई तें हेनों वीरांगना छेलै, कि हुनकों नामों सें पुरस्कारे नै देलों जाय छै, नीरा देवी के जन्मस्थान पर साहित्यकार तेजपाल सिंह धामा आरो मधु धामा नें आपनों सत्तर लाख खर्च करी एक स्मारको बनैलें छै, जैठां पेदम्मा के एक मूर्तिये नै, वहाँ बड़का पुस्तकालयो छै। तीन सौ सें बेसी स्वतंत्रता सेनानी के कथाओ वहाँ सुरक्षित छै,

तबें हुनकों बारे में जानना कोंन मुश्किल छै! अपनों बाबू सें कहियै, तोरा दोनों कें कभी वहाँ लै जैतौ।

(कही कें दादी दोनो पोती कें गल्लों सें लगाय लै छै)



नीरा आर्या

क्रांतिकारी भीकाजी रुस्तम कामा

(वर्ग में शिक्षिका आरो छात्रासिनी आपनों-आपनों जग्घों पर बैठलों छै। शिक्षिका एक छात्रा कें संकेत सें अपनों नगीच बुलावै छै, कानों में कुछ फुसफुसावै छै; तें छात्राहो शिक्षिका के कानों में कुछ कहै छै। शिक्षिका आरो-आरो छात्रा दिस होय कें बोलै छै)

शिक्षिका : अभी शिखा तोरासिनी के सामना एक महान स्वतंत्रता सेनानी के बारे में बोलतै। बोलला के बाद, तोरासिनी कें है बताना छौं कि हौ सब बात कोन स्वतंत्रता सेनानी के छेकै! बीचों में केकरौ नै कुछ पूछना छै, नै टोकना छै।

शिखा : ऊ स्वतंत्रता सेनानी के पूर्वज फारस देश सें भारत ऐलों छेलै आरो मुम्बई में ही स्थायी रूपों सें बसी गेलों छेलै। हिनकों पिता सोहराबजी काफी प्रतिष्ठित आरो धनी आदमी छेलै, जिनका नौ सन्तान छेलै। स्वतंत्रता सेनानी वहा नौ में एक संतान छेलै, जिनकों शिक्षा- दीक्षा मुम्बई के ही एलेग्जेड्रिया गर्ल्स इस्कूली में होलों छेलै। तखनी कोय जनानी, वहू में अमीर

घराना के जनानी कें घर सें बाहर निकलवो मुश्किल रहें, तभियो ऊ स्वतंत्रता सेनानी समाज सेवा में लगलिये रहै। छेवो करलै ऊ बड्डी प्रतिभाशाली जनानी। भाषा ज्ञान भी ओकरों होने छेलै। अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गुजराती भाषा पर तें ओकरों अद्भुत पकड़ छेलै। चूँकि ऊ समाजसेवा में लगले रहै, यही लें सामान्य भारतीय परिवार के जर्जर आर्थिक स्थिति सें ऊ खूब परिचित होय चुकलों छेलै, जे स्थिति कें देखी-समझी ऊ बड्डी दुखित होतें रहें।

शिक्षिका : *(छात्रा के आगू बोलै सें रोकतें आरो अन्य छात्रा दिस होय कें)* आबें तोरा सिनी में सें कोय बतावें पारें कि शिखा कोंन स्वतंत्रता सेनानी के बारे में बताय रहलों छै?

(वर्ग के छात्रा सिनी एक-दूसरा के मुँह देखै छै, पर बोलें पारै छै कुछुवो नै)

शिक्षिका : *(पास के छात्रा सें कहै छै)* आगू के बात कहों।

शिखा : ऊ स्वतंत्रता सेनानी के मनों में धीरे-धीरे अंग्रेजी सरकार के प्रति क्रोध बढ़ें लगलै, वैं मानें लागलै कि भारतीय के जों हेनों दयनीय स्थिति छै, तें एकरों जिम्मेदार आरो कोय नै, एकरों जिम्मेदार खाली अंग्रेज छै। तें अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आवाज उठाय लें वैं आसपास के जनानी आरो ओकरों संगठन कें मजबूत करना शुरू करलकै। जखनी वैं हेनों करी रहलों छेलै, तखनिये कांग्रेस के भी गठन होलै। हौ समय १८८५ ई. छेकै। तें ऊ स्वतंत्रता सेनानी कांग्रेस दिस खिंचतें गेलै। ओकरा लगी रहलों छेलै कि कांग्रेस के स्थापना सें स्वतंत्रता प्राप्ति के भावना कें बल मिलतै। आरो हिनकों पिता कें आबें ई फिकिर हुऍ लागलै कि

अंग्रेजी सरकार के गोस्सा के कारणे कहीं हमरों बेटी संकट में नै पड़ी जाय। से राजनीति दिस सें ओकरो ध्यान मोड़ै लें ही सोहरावजी नें अपनों क्रांतिकारी बेटी के ब्याह मुम्बई के एक नामी-गरामी वकील रुस्तमजी कामा सें करी देलकै।

शिक्षिका : *(शिखा कें आगू बोलै सें रोकतें आरो वर्ग कें ईशारा करतें)* की अभियो तोरासिनी कें समझै में नै आवी रहलों छौं कि शिखा कोंन क्रांतिकारी के बारे में बताय रहलों छै?

(वर्ग के तीन लड़की अपनों-अपनों दायां हाथ ऊपर दिस करै छै)

शिक्षिका : तें ठीक छै, क्रांतिकारी के नाम ला!

(तीनो छात्रा एक्के साथ बोली पड़ै छै)

तीनो छात्रा : मदाम भीकाजी कामा के बारे में बतैलों जाय रहलों छै।

शिक्षिका : एकदम सही। *(शिखा दिस घुमतें हुएँ)* आबें तोहें ऊ क्रांतिकारी के जग्घा पर सीधे नाम लै कें बोलों!

शिखा : तें मदाम भीकाजी कामा कें भले रुस्तमजी सें बिहा होय गेलों रहें, दोनो में विचार भेद के कारण पटलै नै। कारण छेलै कि भीकाजी अंग्रेजी शासक के विरोधिये नै, भारतीय स्वतंत्रता के समर्थको छेलै, जबेकि रुस्तमजी अंग्रेजी शासन सें कोइयो किसिम सें विरोध नै चाहै छेलै। नतीजा मनमुटावे तक में नै रहलै, इस्थिति हेनों ऐलै कि पति-पत्नी में बोलचाल तांय बंद होय गेलै।

कि तभिये मुंबई में प्लेग के महामारी फैली गेलै। प्लेगों में ढेरे लोग मरवे नै करलै, परिवार सिनी इलाका छोड़ी-छोड़ी कें भागौ लें मजबूर होलै। ई हाल

देखी कें मादाम भीकाजी पीड़ित लोगों के रक्षा लेली घरों सें निकली जाय, सेवा-सुश्रुसा करै। एकरों परिणाम ई होलै कि हुनियो गंभीर रूपों सें बीमार पड़ी गेलै। हुनकों स्वास्थ्य हौलें-हौलें एकदम खराबे होलों गेलै, यही कारण आखिर में हुनका यूरोप भेजै के निर्णय परिवावालां लेलकै। एकरों पीछू दू कारण छेलै—एक तें हुनका रोग सें मुक्ति दिलाना, दूसरों कि विदेश गेला सें हुनी अंग्रेजी सत्ता के विरोध में संगठनबाजी नै करें पारतै।

भीकाजी कामा कें विश्वास छेलै कि प्लेग आरो गरीबी के कारण मात्र अंग्रेजी शासन छेकै, जबेंकि हिनकों पति रुस्तमजी के विचार ठीक एकरों विपरीत छेलै। हुनकों विश्वास छेलै कि भारत के विकास अंग्रेजी शासने सें संभव छै। जे भी हुएँ, १९०२ ई. में हुनी लंदन पहुँचलै आरो वहीं दादा भाई नौरोजी के निजी सचिव बनी गेलै। फेनू की छेलै, जे 'वन्दे मातरम्' के गान पर भारत में ही प्रतिबंध छेलै, हुनी वहा नाम सें वहाँ पत्रिका निकालना शुरू करलकै, आरो जबें मदन लाल ढींगरा कें फाँसी देलों गेलै, तें मदन के तलवार नामों सें भी पत्रिका निकाललकै, जे पॉण्डिचेरी के रास्ता सें भारत भेजलों जाय। चूँकि क्रांतिकारी भीकाजी भारतीय स्वतंत्रता के कट्टर हिमायती छेलै, यै लेली ओकरों भारत वापसी पर प्रतिबंध लगाय देलों गेलै। हुनका जबें जेल में बंद करै के कोशिश होलै, तें फ्रांस नें शरणार्थी रूपों में अपना यहाँ रहै के इजाजत दै देलकै। तबें हुनी पेरिस पहुँची कें वही रहें लागलै आरो पेरिस इंडिया सोसाइटी के स्थापना करलकै। पेरिस में रहवों हुनका लेली आसान नै छेलै, हर हफ्ता

थाना में हाजरी देवों, फेनु सीमित साधनों में काम चलैवों कम दुखद नै छेलै। नजरबंदी के कारण हुनकों स्वास्थ्य खराब होलों जाय रहलों छेलै, तें हुनका वीची, बाद में वार्दो भेजी देलों गेलै। युद्ध खत्म होला के बादे हुनी पेरिस लौटें पारलै। १९०७ ई. में हिनी कुछ महीना लें जर्मनी में रहलै, जहाँ हिनी भारत के प्रथम राष्ट्रध्वज फहरैलकै।

(शिखा के आगू बोलै सें शिक्षिका रोकै छै)

शिक्षिका : हों, भारत के ई प्रथम राष्ट्रध्वज छेलै जेकरा भीकाजी कामा नें अन्तराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहरैले छेलै। की तोरा में सें कोय जानै छो, ई तिरंगा कै रंगो सें बनलों छेलै?

(एक छात्रा हाथ उठाय छै आरो ठाढ़ों होय कें कहै छै)

छात्रा : हरा, पीला आरो लाल।

शिक्षिका : यैमें कुछु लिखलों छेलै की?

छात्रा : जी! एकरों बीचों में नागरी लिपि में 'वन्दे मातरम्' लिखलों होलों छेलै।

शिक्षिका : एकदम सही। फेनु तें भीकाजी रुस्तम कामा जहाँ-जहाँ गेलै, भारतीय स्वतंत्रता के बात करले गेलै, ऊ चाहे अमेरिका गेलों रहें कि मिस्र। बस ई समझों कि तैंतीस साल तांय आपनों देश सें दूर रही कें विदेश में भारत देश लेली काम करतें रहलै।

(वक्ता छात्रा कें अपनों सीटों पर बैठी जाय के इशारा करै छै)

शिक्षिका : ई बीचो में हुनकों स्वास्थ बहुत गड़बड़ाय गेलों छेलै, तें १९३५ ई. में अंग्रेजी सरकार द्वारा हुनका आपनों देश भारत लौटै के इजाजत मिललै, वहू ई शर्तों पर कि स्वदेश लौटला पर कोय राजनीतिक गतिविधि में

भाग नै लेतै! मदाम भीका रुस्तम कामा लकवाग्रस्त भी होय चुकलों छेलै ,मतुर देश प्रेम, समाज सेवा के भाव कटियो टा कम नै होलों छेलै।

आरो एक बात जानों, जीवन के आखरी वक्ती, वसीअत में हुनी अपनों सम्पत्ति के बड़ों हिस्सा लड़की सिनी के कल्याण लली करी देलें छेलै। हुनकों जीवन देश आरो नारी कल्याण में ही लगलों रहलै। की तोराा सिनी कें मालूम छौं कि हुनकों पुण्यतिथि कहिया छेकै?

(सब छात्रा एक्के साथ बोली उठै छै)

सब छात्रा : १३ अगस्त १९३६ ई.

(कि तखनिये क्लास समाप्ति के घंटी बजै छै आरो सब छात्रा शिक्षिका के पीछू-पीछू निकली पड़ै छै)



भीकाजी रुस्तक कामा

मातंगिनी हाजरा

(चालीस वर्षीय शिक्षिका क्लास के छात्रा सिनी सें सवाल करतें दिखाय पड़ै छै। क्लास में पूरे दस छात्रा संकेत पैथें बारी-बारी सें ठाढ़ों होय-होय कें उत्तर दै छै)

शिक्षिका : तें तोरा सिनी अबकी टूर में कहाँ जाय के मोंन बनैलों छौ?

सब छात्रा : मेदिनीपुर जिला।

(हाथ उठैलें सब्भे छात्रा एक्के साथ बोली उठै छै)

शिक्षिका : तें एकरों मतलब होलै कि तोरासिनी पहले सें सीखा-बुद्धि करलें होलों छौ। खैर, तोरा सिनी में कोय बतावें पारों कि मेदिनीपुर कहाँ छै?

(सब्भे छात्र एक्के साथ कोलकाता बोलै छै। तबें शिक्षिका एक-एक दिस इशारा करतें पूछना शुरू करै छै)

शिक्षिका : तें तोरासिनी मेदिनीपुर जिला कथी वास्तें जाय लें चाहे छों?

छात्रा १ : वीरांगना मातंगिनी हाजरा के ऊ मूर्ति देखै लें, जे भारत के प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के इच्छा पर बनलै आरो हुनिये अनावरण भी करलें रहै।

शिक्षिका : ठीक बैठी जा। आबें नंबर ३ बतैतै कि ई वीरांगना के दोसरों मूर्ति कहाँ बनलों होलों छै?

छात्रा २ : वीरांगना हाजरा के दोसरों मूर्त्ति कोलकाता में छै, जे १९७७ ई. में वही पर बनैलों गेलो छै, जहाँ हुनकों जन्म होलों छेलै।

शिक्षिका : ठीक छै बैठों! नंबर ३, की तोहें बतावें पारों कि मातंगिनी हाजरा के जन्म कहाँ होलों छेलै?

छात्रा ३ : मेदिनीपुर जिला के होगला गाँव में।

शिक्षिका : ठीक। बैठों! आबें तोरा सिनी जानों कि मातंगिनी के जन्म एक बड्डी गरीब किसानों के यहाँ होलों छै, एतें गरीब कि मातंगिनी के बीहा लाचार होय कें अलीनान गाँव के एक हेनों आदमी सें करै लें पड़लै जेकरो उमिर बौसठ वर्ष के छेलै। नाम छेलै त्रिलोचन हाजरा आरो तखनी मातंगिनी मात्र बारस के छेली। त्रिलोचन के पहलों पत्नी मरी चुकलों छेलै आरो पहलों पत्नी सें जे एक लड़का छेलै, ओकरो सोभाव कम उस्सट नै छेलै। यहा कारण जबें त्रिलोचन के मिरतु होलै, तें मातंगिनी कें ऊ सौतैलों बेटा के बेबहार आरो बेउल्लर होय गेलै। तबें मातंगिनी की करतियै, अलग झोपड़ी में रहें लागली। नंबर ४, की तोहें बतावें पारो कि कै सालों के बाद ओकरों पति त्रिलोचन के मिरतु होय गेलों छेलै?

छात्रा ४ : मात्र छवे सालों के बाद।

शिक्षिका : एकदम सही। बैठों! पति के मरला के बाद, मातंगिनी गाँव के लोगों के सेवा-सहायता करें लगलै, तें गाँव भरी के माता बनी गेलै। लोगों पर ओकरों प्रभावो बढ़लों जावें लगलै। अच्छा, तोहें नंबर ५, बतावें पारों, हौ समय कोंन बातों वास्ते खास करी कें जानलो जाय छै?

छात्रा ५ : हौ समय ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन उग्र हुएँ लगलों छेलै।

शिक्षिका : एकदम ठीक! बैठों! तें मातंगिनी जबें अपनों द्वारी सें हौ क्रांतिकारी सिनी कें देखै तें स्वागत में शंख बजाना शुरू करी दै।

धीरें-धीरें ओकरों मोंन यैमें एत्तें रमें लगलै कि जुलूस बनाय कें वन्दे मातरम् गैतें सड़कों पर निकलें लागलै। हौ उन्नीस सौ बत्तीस ई. के जमाना छेलै। अच्छा, नंबर छों; की तोहें बतावें पारों कि मेदिनीपुर के हौ कोंन जग्घो छेलै, जहाँ मातंगिनी भारी सभा के नेतृत्व करी रहलों छेलै?

छात्रा ६ : ताम्रलुक के कृष्णगंज बाजार में हौ सभा होय रहलों छेलै।

(शिक्षिका छात्रा कें बैठै के इशारा करलकै)

शिक्षिका : नंबर ७, की नंबर ६ के उत्तर सही छै।

छात्रा ७ : नै, ताम्रलुक नै, मेदिनीपुर के कृष्णगंज बाजार में ऊ सभा होय रहलों छेलै।

शिक्षिका : ठीक छै, बैठी जा! आबें जानी लें, कि तोरा दोनो ही सही छों। असल में मेदिनीपुर के प्राचीनतम ताम्रलुक ही छेकै। तामुलिप्तियो कोय-कोय कहै छै। तें ताम्रलुक के कृष्णगंज के बाजार में ही हौ भारी सभा होय रहलों

छेलै, जैमें वीरांगना मातंगिनी हाजरा हाथों में तिरंगा लेलें स्वतंत्रता सेनानी सब के उत्साह 'वंदे मातरम्-वंदे मातरम्' कही-कही बढ़ैवों करी रहलों छेलै कि तखनिये यहा सभा में मातंगिनी हाजरा शपथ लेलें छेलै कि ऊ तब तांय आन्दोलन के साथ रहतै, जब तांय कि देश कें अंग्रेजी शासन सें मुक्ति नै मिली जाय छै। आबें नम्बर ८ जवाब देतै कि ऊ कोंन साल छेलै आरो मातंगिनी कोंन आन्दोलन के समर्थन में आंदोलनकारी के साथ होय गेलों छेलै?

छात्रा ८ : मातंगिनी हाजरा करबंदी आंदोलन के समर्थन में आंदोलनकारी के साथ छेलै। ई बात सत्रह जनवरी उन्नीस सौ तैंतीस ई. के छेकै आरो जे आंदोलन कें दबाय लेली बंगाल के तत्कालीन गवर्नर एंडरसन भारी सैनिक लेलें वहाँ पहुँची गेलों छेलै।

शिक्षिका : बिलकुल सही। बैठो! चूँकि आंदोलनकारी में हाजरा सबसें आगू काला झंडा लेलें ब्रिटिश सरकार के कारों कानून के विरुद्ध नारा लगैवों करी रहलों छेलै, तें सबसें पहलें अंग्रेज सिपाही नें ओकरे पकड़ी कें जेल में बंद करी देलकै। नंबर ९ बतैतै कि ऊ जेल कहाँ करों छेलै?

छात्रा ९ : मुर्शिदाबाद के जेल में मातंगिनी हाजरा कें बंद करी देलों गेलों छेलै।

शिक्षिका : एकदम सही। बैठों! मातंगिनी कें छों महीना तांय जेलों में रखलों गेलों छलै। जबें छुटलै, तखनी वहाँ भीषण बाढ़ ऐलों होलों छेलै। ई बात उन्नीस सौ पैतीस ई. के छेकै। चेचक, हैजा हेनों बीमारी फैली चुकलों छेलै, मतर मातंगिनी अपनों जान के बिना परवाह करले आस-पास के पीड़ित लोगों के सेवा

करतें रहलै। मतर वन्दे मातरम् के भाव सें कभियो नै कटें पारलै। जबें देश में उन्नीस सौ बयालीस के क्रांति उठान पर छेलै, ताम्रलुक में भी तीन आंदोलनकारी मारलों गेलों छेलै। तखनी मातंगिनी हाजरा नें आसपास के गाँवो के लोगों कें आन्दोलन लेली संगठित करलकै। यै किसिम सें पाँच हजार लोग आंदोलन के समर्थन में जुटी ऐलै। फेनु की छेलै, सरकार के विरुद्ध नारा लगैतें सब डाकबंगला पहुँची गेलै, जहाँ पुलिस पहले सें मौजूद छेलै। मतर पुलिस सें प्रदर्शनकारी डरैवाला कहाँ छेलै। नारेबाजी आरो तेज होय कें सरँग छुवें लगलै।

मातंगिनी एक टा चबूतरा पर ठाढ़ी होय कें आंदोलनकारी में जोश भरै के काम करी रहलों छेलै कि तखनिये एक अंग्रेजी सिपाही के बंदूक सें निकललों गोली ओकरों दायाँ हाथ में लगलै। गोली लगना छेलै कि वैं तिरंगा अपनों बायाँ हाथ में लैकें वन्दे मातरम् के नारा लगावें लगलै। देरो नै लगलों छेलै कि सिपाही के बन्दूक सें दोसरों गोली निकललै आरो सीधे बायाँ बाँही में धँसी गेलै। मातंगिनी अपना कें सँभालें पारतियै कि तेसरों गोली आवी कें ओकरों कपारों में धँसी गेलै। प्रदर्शनकारी के बीच हाहाकार मची गेलै, मतर यै सें की होयवाला छेलै, मातंगिनी हाजरा तें देश लेली शहीद होय चुकलों छेली।

(वर्ग में कुछ क्षण लेली शांति पसरी जाय छै)

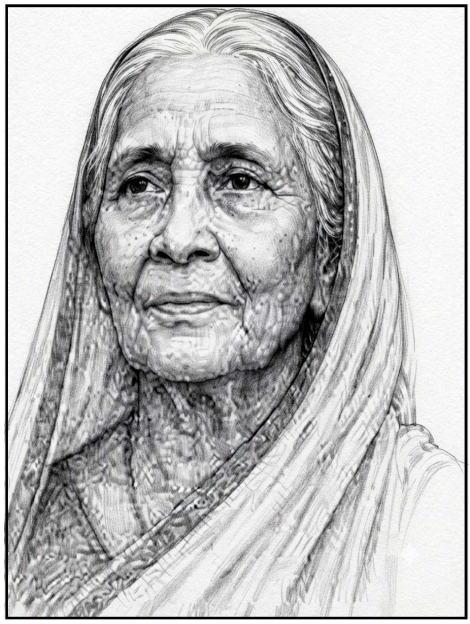
शिक्षिका : मेदिनीपुर चलवै, तें ऊ पवित्र जग्घों पर पहलें जैवै, जैठां हाजरा जी के शरीर गिरलों छेलै। खैर, छात्रा नम्बर १०! की तोहें है बतावें पारै छों कि मातंगिनी

के नामों पर वहाँ जे कॉलेज मिलै छै, ऊ कॉलेजों के नाम की छेकै?

(छात्रा ठाढ़ी तेँ होय छै, मतर आधों मिनटो के बादो उत्तर नै दिएँ पारै छै)

शिक्षिका : तोरों ई चुप्पी बताय रहलों छौं कि तोरा मातंगिनी हाजरा के बारे में कुछ जानकारी नै छौं। तेँ एकरो बदला कल के क्लासों में तोरा कोय वीरांगना के बारे में बतावै लेँ पड़थौं। कोय छात्रा कुछ नै बोलतै, खाली सुनतै। तेँ आयको क्लास यही खतम होय छै।

(सब छात्रा शिक्षिका के निकलथैं, आगू-पीछू होलेँ निकली जाय छै)



मातंगिनी हाजरा

आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.
जन्म स्थान : भागलपुर
माता का नाम : जीवनलता पूर्वे
पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे
शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), पी-एचडी
प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित
सम्पादन : 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका) के अलावा १. गीत-गंगा (अंगिका गीत-संग्रह), २. नवगीतकार मधुसूदन साहा, ३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), ४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद, भागलपुर) ५. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन (अंगिका संसद, भागलपुर), ६. केकरोॅ चाँद केन्होॅ चाँद (अंगिका संसद, भागलपुर), ७. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका संसद, भागलपुर), ८. डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व और वागर्थ (कामायनी, भागलपुर), ९. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली), १०. कर्ण महाकाव्य : संवेदना और रूप-शिल्प (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली), ११. अंगिका लोकगीत
प्रकाशित पुस्तकें : १. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), २. गुलबिया (अंगिका उपन्यास), ३. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास), ४. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह), ५. शरीष की सुधा (कहानी-संग्रह), ६. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), ७. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह), ८. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह), ९. शिशिर की धूप (कविता संग्रह), १०. नमामि गंगे (कविता-संग्रह), ११. ताँका शतक, १२. मंदोदरी (अंगिका प्रबंध काव्य),१३. आकाशगंगा(हायकू), १४. ऋतुरंजन (कविता संग्रह), १५. अंगिका व्याकरण आरो रचना कला (सह-लेखन), १६. कर्ण महाकाव्य का सौन्दर्य सौष्ठव, १७. अंगिका काव्यशास्त्र (सह-लेखन), १८. हे माय गांग (कविताएँ), १९. वंदे मातरम् (अंगिका नाटक), २०. वापसी (लघु अंगिका उपन्यास)
सम्पर्क : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)